“धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है!” — मत्ती 21:9

धन्य हो हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह का नाम।
आइए प्रिय जन, हम परमेश्वर के वचन का अध्ययन साथ मिलकर करें।

यीशु के येरूशलेम में प्रवेश करने से ठीक पहले, उन्होंने अपने दो चेलों को एक छोटा गधा लाने के लिए भेजा, जिस पर वे नगर में प्रवेश करेंगे। यह कोई साधारण कार्य नहीं था—यह एक प्राचीन भविष्यवाणी की पूर्ति थी:

“सिय्योन की बेटी से कहो,
‘देख, तेरा राजा तेरे पास आता है,
नम्र होकर, गधे पर सवार,
अर्थात बोझ उठाने वाले पशु के बच्चे पर।’” — मत्ती 21:5 (जकर्याह 9:9)

इस विनम्र चयन के पीछे एक दिव्य उद्देश्य था। क्यों गधा? घोड़ा, ऊँट या कोई और पशु क्यों नहीं? परमेश्वर इस प्रतीक के द्वारा क्या संदेश दे रहा था?

1. यीशु ने नम्रता के द्वारा भविष्यवाणी पूरी की

येरूशलेम में यीशु का प्रवेश पूरी तरह शास्त्र की पूर्ति थी। जकर्याह ने भविष्यवाणी की थी कि इस्राएल का राजा युद्ध के घोड़े पर नहीं, बल्कि गधे पर आएगा—जो शांति का प्रतीक है।

प्राचीन इस्राएल में:

युद्ध के समय राजा घोड़े पर सवार होते थे
शांति के समय गधे पर सवार होते थे

गधे पर सवार होकर यीशु ने घोषित किया कि वह शांति के राजकुमार हैं (यशायाह 9:6)। वे रोम को हराने नहीं, बल्कि मनुष्य को परमेश्वर से मिलाने आए थे।

“मुझ से सीखो, क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ; और तुम अपने प्राणों के लिये विश्राम पाओगे।” — मत्ती 11:29

मसीह की नम्रता संसार की घमंडपूर्ण शक्ति से भिन्न है। गधा उसी के लिए उपयुक्त था जिसने कहा:
“धन्य हैं वे जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे” (मत्ती 5:5)।

2. गधे का स्वभाव: संवेदनशील और आज्ञाकारी

गधा एक ऐसा पशु है जो खतरे को पहचानने की विशेष क्षमता रखता है। अक्सर उसे जिद्दी कहा जाता है, लेकिन उसकी “जिद” वास्तव में समझदारी हो सकती है—वह खतरे को भाँपकर आगे बढ़ने से इनकार करता है।

यह हमें आध्यात्मिक समझ (discernment) की याद दिलाता है:

“परिपक्व लोगों के लिए ठोस आहार है, जिनकी इंद्रियाँ अभ्यास
के द्वारा अच्छे और बुरे में भेद करने के लिए प्रशिक्षित हो
गई हैं।” — इब्रानियों 5:14

बाइबल में बिलाम का गधा (गिनती 22:21–34) भी यह दिखाता है कि वह परमेश्वर के दूत को देख सकता था, जबकि बिलाम अंधा था। वह गधा रुका और बिलाम का जीवन बचाया।

इसी प्रकार, यीशु को ले जाने वाले गधे आज्ञाकारी थे और उन्होंने उद्धार की ओर कदम बढ़ाया।

3. एक व्यक्तिगत अनुभव और आत्मिक संकेत

एक अनुभव के माध्यम से यह समझाया गया कि जब दो या तीन एक साथ होते हैं, तो परमेश्वर उनके बीच उपस्थित होता है:

“जहाँ दो या तीन मेरे नाम से इकट्ठे होते हैं, वहाँ मैं उनके
बीच में हूँ।” — मत्ती 18:20

यह एक आत्मिक चित्र है कि मसीह स्वयं हमारे बोझ उठाने में हमारे साथ होते हैं।

4. वह गधा जिसने उद्धार को देखा

जब यीशु येरूशलेम में प्रवेश कर रहे थे, भीड़ ने पुकारा: “होशाना!” जिसका अर्थ है “हम उद्धार करते हैं”।

“होशाना दाऊद के पुत्र को!” — मत्ती 21:9

कल्पना करें कि वह गधा क्या महसूस कर रहा था—वह उद्धारकर्ता को अपनी पीठ पर लेकर चल रहा था। वह शांति और उद्धार को ले जा रहा था।

5. गधे का प्रतीक: छुटकारा और उद्धार

पुराने नियम में:

“हर पहिलौठा गधा मेम्ने के द्वारा छुड़ाया जाए।” — निर्गमन 13:13

यह एक अद्भुत चित्र है:

अशुद्ध गधे को मेम्ने के द्वारा छुड़ाया जाता है
और वही मेम्ना (यीशु मसीह) स्वयं उस गधे पर सवार होता है

यह उद्धार की गहरी भविष्यवाणी है।

6. पश्चाताप और नया जीवन का आह्वान

यह शिक्षा हमें यह नहीं सिखाती कि हम पशुओं को महिमामंडित करें, बल्कि यह कि मसीह की महिमा हर सृष्टि के माध्यम से प्रकट होती है।

“मेरे पास आओ, तुम सब जो परिश्रम करते हो और बोझ से दबे हो, और
मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।” — मत्ती 11:28

अनुग्रह का द्वार अभी खुला है—लेकिन हमेशा नहीं रहेगा।
अभी पश्चाताप करें, अपने पापों से लौटें और मसीह को अपना जीवन सौंप दें।

यदि आपने अभी तक बपतिस्मा नहीं लिया है, तो शास्त्र के अनुसार जल में डूबकर बपतिस्मा लें (यूहन्ना 3:23), और यीशु मसीह के नाम में (प्रेरितों 2:38)।

7. मसीह: मार्ग, सत्य और जीवन

यीशु ही मार्ग, सत्य और जीवन हैं:

“मैं ही मार्ग हूँ, सत्य हूँ और जीवन हूँ; बिना मेरे कोई पिता
के पास नहीं आता।” — यूहन्ना 14:6

गधे की आज्ञाकारिता हमें उस प्रकार के शिष्यत्व की ओर संकेत करती है जो मसीह चाहता है—न घमंड, न शक्ति, बल्कि नम्रता, सेवा और विश्वासयोग्यता।

मैरानाथा।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp